खेत्ताणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइया सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ।। १ ।।

तत्थ सत्थाणं दुविहं सत्थाणसत्थाणं विहारवदिसत्थाणमिदि । वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियभेएण समुग्घादो चउव्विहो । एत्थ णेरइएसु आहारसमुग्घादो णत्थि, महिड्ढिपत्ताणमिसीणमभावादो । केवलिसमुग्घादो वि णत्थि, तत्थ सम्मत्तं मोत्तूण वयगंधस्स वि अभावादो । तेजइयसमुग्घादो वि तत्थ णत्थि, विणा महव्वएहि तदभावादो । उववादो एगविहो । तत्थ वेदणावसेण ससरीरादो बाहिमेगपदेसमादिं कादूण जावुक्कस्सेण ससरीरतिगुणविप्फुंजणं[1] वेयणसमुग्घादो णाम । कसायतिव्वदाए ससरीरादो जीवपदेसाणं तिगुणविप्फुंजणं[1] कसायसमुग्घादो णाम । विविहिड्ढिस्स माहप्पेण संखेज्जासंखेज्जजोयणाणि सरीरेण ओट्ठहिय अवट्ठाणं वेउव्वियसमुग्घादो णाम । अप्पप्पणो अच्छिदपदेसादो जाव उप्पज्जमाणखत्तं ति आयामेण

क्षेत्रानुगमसे गतिमार्गणाके अनुसार नरकगतिमें नारकी जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपपादकीअपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ।। १ ।।

आगममें स्वस्थान पद स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थानके भेदसे दो प्रकारका है । वेदना, कषाय वैक्रियिक और मारणंतिकके भेदसे समुद्घात चार प्रकारका है । यहां नारकियोंमें आहारकसमुद्घात नहीं है, क्योंकि, महर्धिप्राप्त ऋषियोंका वहां अभाव है । केवलिसमुद्घात भी नही है क्योंकि, वहां सम्यक्त्वको छोड व्रत की गन्ध भी नहीं है । तैजससमुद्घात भी वहां नहीं है, क्योंकि, महाव्रतोंके ग्रहण किये बिना तैजससमुद्घात नहीं होता । उपपाद एक प्रकारका है । इनमें वेदनाके वशसे अपने शरीरसे बाहर एक प्रदेशसेलेकर उत्कृष्टसे अपने शरीरसे तिगुणे आत्मप्रदेशोंके फैलनेका नाम वेदनासमुद्घात है । कषायकी तीव्रतासे जीवप्रदेशोंका अपने शरीरसे तिगुणे प्रमाण फैलनेको कषायसमुद्घात कहते हैं । विविध ऋद्धियोंके महात्म्यसे संख्यात व असंख्यात योजनोंको शरीरसे व्याप्त करके जीवप्रदेशोंके अवस्थानको वैक्रियिकसमुद्घात कहते हैं । आयामकी अपेक्षा अपने अपने कहने के प्रदेशसे लेकर

---

१. मु. प्रती - विप्पुंजणं इतिपाठ :

एगपदेसमादिं कादूण जावुक्कस्सेण सरीरतिगुणबाहल्लेण[1] कंडेक्कखंभट्ठियत्तोरण-हल-गोमुत्तायारेण अंतोमुहुत्तावट्ठाणं मारणंतियसमुग्घादो णाम। उववादो दुविहो— उजुगदिपुव्वओ विग्गहगदिपुव्वओ चेदि। तत्थ एक्केक्कओ दुविहो— मारणंतियसमुग्घादपुव्वओ तव्विवरीदओ चेदि। तेजासरीरं दुविहं पसत्थमप्पसत्थं चेदि। अणुकंपादो दक्खिणंसविणिग्गयं डमर-मारीदिपसमक्खमदो सपरहिदं[2] सेदवण्णं णव-बारहजोयण-रुंदायामं पसत्थं णाम, तव्विवरीदमियरं। आहारसमुग्घादो णाम हत्थपमाणेण सव्वंग-सुंदरेण समचउरससंठाणेण हंसधवलेण रस-रुधिरमांस-मेदट्ठि-मज्ज-सुक्कसत्तधाउव-ज्जिएण[3] विसग्गि-सत्थादिसयलबाहामुक्केण वज्ज-सिलाथंभ-जलपव्वय[4]गमणदच्छेण ससीसादो उग्गएण देहेण तित्थयरपादमूलगमणं। दंड-कवाडपदर-लोगपूरणाणि केवलिसमुग्घादो णाम। अप्पप्पणो उप्पण्णगामाईणं सीमाए अंतो परिभमणं सत्थाण-सत्थाणं णाम। तत्तो बाहिरपदेसे हिंडणं विहारवदिसत्थाणं णाम। तत्थ 'णरइया अप्पणो पदेहि केवडिखेत्ते होंति' त्ति आसंकासुत्तं। एवमासंकिय उत्तर सुत्तं भणदि—

उत्पन्न होनेके क्षेत्र तक, तथा बाहल्यसे एक प्रदेशसे लेकर उत्कृष्टसे शरीरसे तिगुणे बाहल्यरूप (जीवप्रदेशोंके) काण्ड, एक खम्भस्थित तोरण, हल व गोमूत्रके आकारसे अन्तर्मुहुर्त तक रह-नेको मारणान्तिकसमुद्घात कहते हैं। (देखो पुस्तक १. पृ २९९)। उपपाद दो प्रकारका है— ऋजुगतिपूर्वक और विग्रहगतिपूर्वक। इनमें प्रत्येक मारणांतिकसमुद्घातपूर्वक और तद्विपरीतके भेदसे दो प्रकारका है। तैजसशरीर प्रशस्त और अप्रशस्तके भेदसे दो प्रकारका है। उनमें अनुकम्पासे प्रेरित होकर दाहिने कंधेसे निकले हुए, राष्ट्रविप्लव और मारी आदि रोगविशेषके शान्त करने रूपसे अपना और दूसरेका हितकारक श्वेतवर्ण, तथा नौ योजन विस्तृत एवं बारह योजन दीर्घ समुद्घातको प्रशस्त और इससे विपरीतको अप्रशस्त तैजससमुद्घात कहते हैं। हस्तप्रमाण, सर्वांगसुन्दर, समचतुरस्रसंस्थान संयुक्त, हंसके समान धवल; रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र, इन सात धातुओंसे रहित; विष, अग्नि, एवं शस्त्रादि समस्त बाधाओंसे मुक्त; वज्र, शिला, स्तम्भ, जल व पर्वतमेंसे गमन करनेमें दक्ष; तथा अपने मस्तकसे उत्पन्न हुए शरीरसे तीर्थंकरके पादमूलमें जानेका नाम आहारकसमुद्घात है। दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरणरूप जीवप्रदेशोंकी अवस्थाको केवलिसमुद्घात कहते हैं। अपने अपने उत्पन्न होनेके ग्रामादिकोंकी सीमाके भीतर परिभ्रमण करनेको स्वस्थानस्वस्थान और इससे बाह्य प्रदेशमें घूमनेको विहारवत्स्वस्थान कहते हैं। उनमें 'नारकी जीव अपने पदोंसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं' यह आशंकासूत्र है। इस प्रकार आशंका करके उत्तर सूत्र कहते हैं —

१. मु. प्रती बाहल्लेण वृति पाठः। २. मु. प्रती क्खमं दोसपर हिदं इति पाठः
३. मु. प्रती धाउवत्तज्जिएण इतिपाठः ४. मु. प्रती पव्वय इतिपाठः

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ २ ॥

एत्थ लोगो पंचविहो– उड्ढलोगो अधोलोगो तिरियलोगो मणुसलोगो सामण्णलोगो चेदि । एदेसिं पंचण्हं पि लोगाणं लोगग्गहणेण गहणं कादव्वं । कुदो ? देसामासियत्तादो । णेरइया सव्वपदेहि चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागे होंति, माणुसलोगादो असंखेज्जगुणे । तं जहा– सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जा भागा, विहारवदिसत्थाण वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादरासीओ मूलरासिस्स संखेज्जदिभागो । एदमत्थपदं सव्वत्थ वत्तव्वं । पुणो सत्थाणसत्थाणादिणेरइयरासीओ ठविय अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तओगाहणाहि गुणिय तेरासियकमेण पंचहि लोगेहि ओवट्टिदे चदुण्णं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसलोगादो असंखेज्जगुणमागच्छदि । णवरि वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेसु ओगाहणा कायव्वा । मारणंतियखेत्ते आणिज्जमाणे बिदियपुढविदव्वादो आणेदव्वं, तत्थ रज्जुमेत्तायामुवलंभादो । पढमपुढविमारणंतियखेत्तेन घेत्तूण ओवट्टणा किण्ण कीरदे, असंखेज्जगुणदव्वदंसणादो, आवलियाए असंखेज्जदिभाग-

---

नारकी जीव उक्त तीन पदोंसे लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ २ ॥

यहां लोक पांच प्रकारका है – ऊर्ध्वलोक, अधोलोक तिर्यग्लोक, मनुष्यलोक और सामान्यलोक । यहां लोकके ग्रहणसे इन पाचों ही लोकोंका ग्रहण करना चाहिये क्योंकि, यह सूत्र देशामर्शक है । नारकी जीव सर्व पदोंसे चार लोकोंक असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं वह इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थानराशि मूलराशिके संख्यात बहुभाग तथा विहारवत्स्वस्थानराशि, वेदनासमुद्घातराशि कषायसमुद्घातराशि एवं वैक्रियिकसमुद्घातराशि, ये राशियां मूलराशिके संख्यातवें भागप्रमाण होती हैं । यह अर्थपद सर्वत्र कहना चाहिये । पुनः स्वस्थानस्वस्थानादि नारकराशियोंको स्थापित कर अंगुलके संख्यातवें भागप्रमाण अवगाहनाओंसे गुणित कर त्रैराशिकक्रमसे पांच लोकोंसे (पृथक् पृथक्) अपवर्तित करनेपर चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मानुषलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र लब्ध होता है । विशेषता यह है कि वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातमें अवगाहना नौगुणी करनी चाहिये । (जीवस्थानकी क्षेत्रप्ररूपणामें वैक्रियिकसमुद्घातके लिये अवगाहना नौगुणी नहीं किन्तु संख्यातगुणी अलगसे कही गई हैं । (देखो पु. ४. पृ. ६३) मारणांतिक क्षेत्रके लाने समय उसे द्वितीय पृथिवीके द्रव्यसे लाना चाहिये, क्योंकि, वहां राजुमात्र आयामकी उपलब्धि है ।

शंका – प्रथम पृथिवीके मारणांतिकक्षेत्रको ग्रहण कर अपवर्तना क्यों नहीं की जाती क्योंकि, वहां असंख्यातगुणा द्रव्य देखा जाता है, तथा वहां आवलीके असंख्यातवें

मेत्तुवक्कमणकालुवलंभादो' च ? ण, तत्थ संखेज्जजोयणमेत्तमारणंतियखेत्तायामदंसणादो। पढमपुढवीए वि विग्गहगईए कये' मारणंतियजीवाणमसंखेज्जजोयणायामं मारणंतियखेत्तमुवलब्भदे ? ण, असंखेज्जसेडिपढमवग्गमूलमेत्तायाममारणंतियखेत्तजीवाणं बहुआणमणुवलंभादो। तेण बिदियपुढविदव्वे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालेण भागे हिदे एगसमएण मरतजीवाण पमाणं होदि। पुणो एदेसिमसंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा कालं करेदि, बहुआणं सुहपाणीणमभावादो असंखेज्जा भागा मारणतियं करेंति। मारणंतियं करेंताणमसंखेज्जदिभागो उजुगदीएण' मारणंतियं करेदि, अप्पणो ट्ठिदपदेसादो कंडुज्जुवखेत्तम्हि उप्पज्जमाणाणं बहुआणमणुवलंभादो। विग्गहगदीए मारणंतियं करेंताणमसंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा विग्गहगदीए उप्पज्जमाणरासी होदि, तेण मरंतजीवाणं असंखेज्जे भागे मारणंतियकालब्भंतरउवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण गुणिदे मारणंतियकालम्हि संचिदरासिपमाणं होदि। पुणो तम्मुहवित्थारेण णवरज्जुगुणेण गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि।

भागप्रमाण उपक्रमणकालकी भी उपलब्धि है ?

समाधान– नही, क्योंकि वहां संख्यात योजनमात्र मारणान्तिक क्षेत्रका आयाम देखा जाता है।

शंका- प्रथम पृथिवीमें भी विग्रहगतिमें जिन्होंने मारणान्तिक समुद्घात किया है ऐसे योजन आयामवाला मारणान्तिक क्षेत्र उपलब्ध होता है ? देखो पु. ४, पृ ६३-६४)

समाधान – नहीं, क्योंकि, असंख्यात श्रेणियोंके प्रथम वर्गमूलमात्र आयामवाले मारणान्तिक क्षेत्रमें बहुत जीवोंकी अनुपलब्धि है।

इसलिये द्वितीय पृथिवीके द्रव्यमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण व उपक्रमणकालका भाग देनेपर एक समय की अपेक्षा मारणान्तिक जीवोंका प्रमाण होता है। पुनः इनके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव मारणान्तिकसमुद्घातके विना ही कालको करते हैं, तथा वहां बहुत पुण्यवान् प्राणियोंका अभाव होनेसे असंख्यात बहुभागप्रमाण जीव मारणान्तिकसमुद्घातको करते हैं। मारणान्तिकसमुद्घात करनेवालोंके असंख्यातवें भागमात्र ऋजुगतिसे मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं, क्योंकि, अपने स्थित प्रदेशसे बाणके समान ऋजु क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले बहुत जीव नही पाये जाते। विग्रहगतिसे मारणान्तिकसमुद्घातको करनेवालोंके असंख्यातवें भागप्रमाण मारणान्तिकके विना विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेवाली राशि है, इस कारण मरनेवाले जीवोंके असंख्यात बहुभागको आवलीके असंख्यातवें भागमात्र मारणान्तिककालके भीतर उपक्रमणकालसे गुणित करनेपर मारणान्तिककालमें संचित राशिका प्रमाण होता है। पुनः उसे नौराजुगुणित मुखविस्तारसे गुणा करनेपर मारणान्तिक क्षेत्र होता है। यहां भी पांच लोकोंका अपवर्तन

१. मु. प्रती कयं इतिपाठ : २. अ. ब. प्रत्यो : कालुवलंभादे .... अग्रेपाठ : स्खलित :
३ मु प्रती उजुगदीए इतिपाठ :

एत्थ वि पंचलोगोवट्टणं पुव्वं व कायव्वं ।

उववादखेत्ते आणिज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण बिदियपुढविदव्वे भागे हिदे तिरिक्खेहिंतो बिदियपुढवीए उप्पज्जमाणरासी होदि । एदस्स असंखेज्जदिभागो चेव उजुगदीए उप्पज्जदि, कंडुज्जुएण मग्गेण सगउप्पत्तिट्ठाणमागच्छमाणजीवाणं बहुयाणमणुवलंभादो । तेणेदस्स असंखेज्जा भागा विग्गहगदीए उप्पज्जमाणतिरिक्खरासी होदि । पुणो एदं दव्वं तिरिक्खोगाहणमुहवित्थारेण तप्पाओग्गअसंखेज्जजोयणगुणेण गुणिदे उववादखेत्तं होदि । ओवट्टणा पुव्वं व कायव्वा । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

कुदो ? सत्थाण-समुग्घाद-उववादेहि लोगस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो । एसो दव्वट्ठियणयं पडुच्च णिद्देसो । पज्जवट्ठियणयं पडुच्च परूविज्जमाणे सत्तण्हं पुढवीणं दव्वविसेसो ओगाहणविसेसो मारणंतिय-उववादखेत्ताणमायामविसेसो च अत्थि । णवरि सो जाणिय वत्तव्वो ।

पूर्वके समान करना चाहिये ।

उपपादक्षेत्रके लानेपर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे द्वितीय पृथिवीके द्रव्यको भाजित करनेपर तिर्यंचोंसे द्वितीय पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाली राशि होती है । इसका असंख्यातवां भाग ही ऋजुगतिसे उत्पन्न होता है, क्योंकि, बाणके समान ऋजुमार्गसे अपने उत्पत्तिस्थानको आनेवाले जीव बहुत नहीं पाये जाते । इसलिये दूसरी पृथिवीके द्रव्यके असंख्यात बहुभागप्रमाण वहां विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेवाली तिर्यंचराशि है । पुन: इस द्रव्यको तत्प्रायोग्य असंख्यात योजनोंसे गुणित तिर्यंचोंकी अवगाहनारूप मुखविस्तारसे गुणित करनेपर उपपादक्षेत्र होता है । अपवर्तन पूर्वके समान करना चाहिये । शेष जानकर कहना चाहिये ।

इसी प्रकार सात पृथिवियोंमें नारकी जीव पूर्वोक्त पदोंकीअपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ३ ॥

क्योंकि, स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंकीअपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागपनेके प्रति कोई विशेषता नहीं है । यह निर्देश द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे किया है । पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा प्ररूपण करनेपर सात पृथिवियोंके द्रव्यकी विशेषता, अवगाहनाकी विशेषता और मारणान्तिक एवं उपपाद क्षेत्रोंके आयामकी विशेषता है । इसलिये उसे जानकर कहना चाहिये ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४ ॥

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण- वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिय-उववादाणि तिरिक्खेसु अत्थि, अवसेसाणि णत्थि। एदेहि पदेहि तिरिक्खा केवडिखेत्ते होंति त्ति आसंकिय परिहारं भणदि–

सव्वलोए ॥ ५ ॥

कुदो ? आणंतियादो। ण च ण सम्मांति[1] त्ति आसंकणिज्जं, लोगागासम्मि अणंतोगाहणसत्तिसंभवादो। विहारवदिसत्थाणखेत्तं तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं। कुदो ? तसपज्जत्ताणं तिरिक्खाणं संखेज्जदिभागम्मि विहारुवलंभादो। तदो एदं पुध परूवेदव्वं ? ण, सत्थाणम्मि एदस्संतब्भूदत्तणेण पुध परूवणाभावादो। वेउव्वियसमुग्घादखेत्तं चदुण्हं

तिर्यंचगतिमें तिर्यंच स्वस्थान, समुद्घात और उपपादपदकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ४ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये पद तिर्यंचोंमें होते हैं शेष नहीं होते। 'इन पदोंकीअपेक्षा तिर्यंच कितने क्षेत्रमें रहते हैं' इस प्रकार आशंका करके उसका परिहार कहते हैं --

तिर्यंच जीव उक्त पदोंकी अपेक्षा सर्व लोकमें रहते हैं ? ॥ ५ ॥

क्योंकि, वे अनन्त हैं। अनन्त होनेसे वे लोकमें नहीं समाते हैं, ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, लोकाकाशमें अनन्त अवगाहनशक्ति सम्भव है। विहारवत्स्वस्थानक्षेत्र तीन लोकोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। तिर्यग्लोकके संख्यातवें भाग प्रमाण है और अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, त्रस पर्याप्त तिर्यंचोंका तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें विहार पाया जाता है।

शंका– स्वस्थानस्वस्थानसे विहारवत्स्वस्थानक्षेत्रमें विशेषता होनेके कारण उसकी पृथक् प्ररूपणा करनी चाहिये ?

समाधान – नहीं क्योंकि, स्वस्थानमें इसका अन्तर्भाव होनेसे पृथक प्ररूपणा नहीं की गई।

वैक्रियिकसमुद्घातका क्षेत्र चार लोकोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण है और मनुष्यक्षेत्रसे

---

१. अ. आ. प्रत्योः सम्म्यति इतिपाठः।

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं । कुदो ? तिरिक्खेसु विउव्वमाणरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तघणंगुलेहि गुणिदसे- ढिमेत्तो त्ति गुरूवदेसादो। तम्हा एदस्स पुधपरूवणा कादव्वा? ण, एदस्स समुग्घादे अंतब्भावादो। सेसं सुगमं।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ६ ॥

एदमासंकासुत्तं सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ७ ॥

एदं देसामासियं सुत्तं, देसपदुप्पायणमुहेण सूचिदाणेयत्थादो। एत्थ ताव पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं वुच्चदे। तं जहा-एदे

असंख्यातगुणा है, क्योंकि, तिर्यंचोंमे विक्रिया करनेवाली राशि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण घनांगुलोंसे गुणित जगश्रेणीप्रमाण है, ऐसा गुरुओंका उपदेश है।

शंका– चूंकि तिर्यंचोंके वैक्रियिकसमुद्घातक्षेत्रमें विशेषता है इस कारण उसकी पृथक् प्ररूपणा करनी चाहिये ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, इसका समुद्घातमे अन्तर्भाव हो जाता है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती और पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपपादपदकीअपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते है ॥ ६ ॥

यह आशंकासूत्र सुगम है।

उक्त चार प्रकारके तिर्यंच उक्त पदोंसे लोकके असंख्यातवें भागप्रमाणक्षेत्रमे रहते हैं ॥ ७ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, एक देश कथनकी मुख्यतासे वह अनेक अर्थोको सूचित करता है। यहां पहले पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनियोंका क्षेत्र कहा जाता है। वह इस प्रकार है– ये तीनों ही प्रकारके तिर्यञ्च स्वस्थानस्वस्थान,

---

तिण्णि वि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? एदेसिं संखेज्जघणंगुलोगाहणत्तादो । पंचिंदियतिरिक्खेसु अपज्जत्तरासी होदि बहुओ, तक्खेत्तेण किण्ण ओवट्टणा कीरदे ? ण तत्थ अंगुलस्स असंखेज्जदिभागोगाहणम्मि बहुवखेत्ताणुवलंभादो । विहारपाओग्गरासिस्स संखेज्जा भागा सत्थाणसत्थाणरासीए एत्थ संखेज्जदिभागमेत्ता सेसरासीओ त्ति घेत्तव्वं ।

वेउव्वियसमुग्घादखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं । कुदो ? तिरिक्खेसु विउव्वमाणरासिस्स असंखेज्जघणंगुलेहि गुणिदसेडिमेत्तपमाणुवलंभादो । एदे तिण्णि वि मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति । कुदो ? एदेसिं तिण्हं पंचिंदियतिरिक्खाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारुवलंभादो । तं जहा— एदाओ तिण्णि वि रासीओ पहाणीभूदसंखेज्जवस्साउअतिरिक्खोवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे एगसमएण मरंतजीवाणं पमाणं होदि । एदेसिमसंखेज्जदिभागो चेव मारणंतिएण विणा णिप्फिड-

....

विहारवत्स्वस्थान वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त होकर तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, ये संख्यात घनांगुलप्रमाण अवगाहनावाले हैं ।

शंका- पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें अपर्याप्त राशि बहुत है, इसलिये वे उनके क्षेत्रकी अपेक्षा अपवर्तन क्यों नहीं करते ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें अंगुलके असंख्यातवे भागप्रमाण अवगाहना होनेसे बहुत क्षेत्रकी प्राप्ति नहीं होती । विहारप्रायोग्य राशिके संख्यात बहुभागप्रमाण एवं स्वस्थानस्वस्थान राशिके अपेक्षा संख्यातवें भागमात्र यहां शेष राशियां हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

वैक्रियिकसमुद्घातक्षेत्र चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण और अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, तिर्यंचोंमें विक्रिया करनेवाली राशिका प्रमाण असंख्यात घनांगुलोंसे गुणित जगश्रेणीप्रमाण पाया जाता है । ये तीनों ही तिर्यंच मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त होकर तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें रहते है, क्योंकि, इन तीनों पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र भागहार उपलब्ध है । वह इस प्रकार है - इन तीनों ही राशियोंमें प्रधानभूत संख्यातवर्षायुष्क तिर्यंचोंके उपक्रमणकालरूप आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर एक समयमे मरनेवाले जीवोंका प्रमाण होता है । इनके असंख्यातवें भाग ही मारणान्तिकसमुद्घातके बिना मरण करनेवाली राशि है, ऐसा जानकर इसराशिके असंख्यात

माणरासि त्ति कट्टु एदस्स असंखेज्जे भागे मारणंतियउवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गुणगारउवक्कमणकालादो भागहारउवक्कमणकालो संखेज्जगुणो त्ति उवरिमगुणगारेण हेट्ठिमभागहारमावलियाए असंखेज्जदिभागमोवट्टिय सेसेण भागे हिदे सग-सगरासीणं संखेज्जदिभागो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जजोयणाणि मुक्कमारणंतियजीवे इच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो । पुणो एदं रासिं रज्जुगुणिदसंखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि । एदेण तिसु लोगेसु भागे हिदेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति वुत्तं । णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे ।

तिण्हं रासीणमुववादखेत्तं पि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणं । एदस्स खेत्तस्स पमाणे आणिज्जमाणे मारणंतियभंगो । णवरि एगसमयसंचिदो एसो रासि त्ति कट्टु आवलिय असंखेज्जदिभागो गुणगारो अवणेदव्वो । पढमदंड-

....

बहुभागको मारणान्तिक उपक्रमणकालरूप आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर चूंकि गुणकारभूत उपक्रमणकालसे भागहारभूत उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, इसलिये उपरिम गुणकारसे आवलीके असंख्यातवें भागरूप अधस्तन भागहारका अपवर्तन करके शेषका भाग देनेपर अपनी अपनी राशियोंका संख्यातवां भाग आता है । पुनः असंख्यात योजनों तक मारणान्तिक समुद्घातको करनेवाले जीवोंकी इच्छाराशि स्थापित कर अन्य पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र भागहारको स्थापित करना चाहिये । पुनः इस राशिको राजुसे गुणित असंख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित करनेपर मारणान्तिक क्षेत्रका प्रमाण होता है । इसका तीन लोकोंमें भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग लब्ध होता है । इसीलिये 'तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें रहते हैं' ऐसा कहा है । उक्त जीव मारणान्तिक समुद्घातको प्राप्त होकर मनुष्यलोक और तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । (देखो पुस्तक ४, पृ. ७१-७२) ।

उक्त तीन राशियोंका उपपादक्षेत्र भी तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण और मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा है । इस क्षेत्रके प्रमाणके लानेपर वह मारणान्तिकक्षेत्रके समान है । विशेष इतना है कि यह राशि एक समय संचित है, ऐसा जानकर आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार अलग कर देना चाहिये । प्रथम

मुवसंहरिय विदियदंडट्ठिदजीवे इच्छिय अवरो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो ? उस्सेधघणंगुले पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदे एगखंडमेत्तोगाहणादो । मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? दो-तिण्णिपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहाराणं जहाकमेण मारणंतिय-उववादखेत्तेसु उवलंभादो । सेसं सुगमं ।

मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी सत्थाणेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ८ ॥

एत्थ सत्थाणणिद्देसेण सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणाणं गहणं, सत्थाणत्तणेण दोण्हं भेदाभावादो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

दण्डका उपसंहार कर द्वितीय दण्डमें स्थित जीवोंकी इच्छा कर अन्य पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार स्थापित करना चाहिये ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव स्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त होकर चार लोकोंके असंख्यातवे भागमें तथा अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि, उत्सेध घनांगुलको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर एक खण्डमात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी अवगाहना लब्ध होती है। मारणान्तिक और उपपादको प्राप्त पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, दो और तीन पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र भागहार यथाक्रमसे मारणान्तिक और उपपाद क्षेत्रोंमें उपलब्ध हैं। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनी स्वस्थान व उपपाद पदकीअपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ८ ॥

इस सूत्रमें 'स्वस्थान' के निर्देशसे स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान दोनोंका ग्रहण किया गया है, क्योंकि, स्वस्थानपनेसे दोनोंमें कोई भेद नहीं है। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

उक्त तीन प्रकारके मनुष्य स्वस्थान व उपपाद पदोंकीअपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागक्षेत्रमें रहते हैं ॥ ९ ॥

---

१. अ प्रती सत्थाण इति पाठः ।

एत्थ लोगणिद्देसो देसामासियो, तेण पंचण्हं लोगाणं गहणं होदि। एदेण सूचिदत्थस्स परूवणं कस्सामो। तं जहा– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाणट्ठिदतिविहा मणुसा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे मोत्तूण माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे अच्छंति[1]। कुदो ? मणुस-मणुस-पज्जत्त-मणुसणीणं संखेज्जजीवाणं खेत्तग्गहणादो। सेडीए असंखेज्जदिभागमेत्तमणुसअपज्जत्ताणं सत्थाणखेत्तस्स गहणं किण्ण कीरदे ? ण, तस्स अंगुलस्स संखेज्जदिभागे संखेज्जंगुलेसु वा णिचियक्कमेण अवट्ठाणादो। उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो ? पहाणीकदमणुसअपज्जत्तउववादखेत्तादो। णवरि मणुसपज्जत्त-मणुसणीणमुववादखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणं। मणुसाणमुववादखेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे। तं जहा– मणुसअपज्जत्तरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालेण दोहि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेहि य ओवट्टिय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागोवट्टिदपदरंगुलेण गुणिदसेडीसत्तमभागेण गुणिदे उववादखेत्तं होदि। एत्थ पंचलोगोवट्टणं जाणिय कायव्वं। सेसं सुगमं।

सूत्रमें लोकका निर्देश देशामर्शक है, इसलिये उससे पांचों लोकोंका ग्रहण होता है। इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थानमें स्थित तीन प्रकारके मनुष्य चार लोकोंके असंख्यातवें भागके सिवाय मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भाग क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि यहां मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनी, इन संख्यात जीवोंके क्षेत्रका ग्रहण है।

शंका- जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र मनुष्य अपर्याप्तोंके स्वस्थानक्षेत्रका ग्रहण क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान- नही, क्योंकि, मनुष्य अपर्याप्तराशिका अंगुलके संख्यातवे भागमें अथवा संख्यात अंगुलोंमें निचितक्रमसे अवस्थान है।

उपपादको प्राप्त उक्त तीन प्रकारके मनुष्य तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, यहां मनुष्य अपर्याप्तोंके उपपादक्षेत्रकी प्रधानता है। विशेषता यह है कि मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंका उपपादक्षेत्र चार लोकोंके असंख्यातवें भाग तथा अढ़ाई द्वीपसे असंख्यातगुणा है। मनुष्योंके उपपादक्षेत्रके निकालनेके विधानको कहते हैं। वह इस प्रकार है– मनुष्य अपर्याप्त राशिको आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकालसे तथा पल्योपमके दो असंख्यात भागोंसे अपवर्तित करके पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित प्रतरांगुलसे गुणित जगश्रेणीके सातवें भागसे गुणित करनेपर उपपादक्षेत्र होता है। यहां पांच लोकोंका अपवर्तन जानकर करना चाहिये। शेष सूत्रार्थ सुगम है।

---

१. मु प्रती लोगाण असंखेज्जदिभागे अच्छंति इति पाठः।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १० ॥

एत्थ समुग्घादणिद्देसो दव्वट्ठियणयमवलंबिय ट्ठिदो, संगहिदवेदण-कसाय-वेउव्विय मारणंतिय-तेजाहार-दंड-कवाड-पदर-लोगपूरणत्तादो । सेसं सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११ ॥

जेण एदं देसामासियं सुत्तं तेणेदेण सूइदत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा– वेदण-कसाय-वेउव्विय-तेजाहारसमुग्घादगदा तिविहा मणुसा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे । णवरि मणुसिणीसु तेजाहारं णत्थि । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे,णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो? पहाणीकदमणुसअपज्जत्तखेत्तादो । णवरि मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं मारणंतियखेत्तं चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणं । एवं दंड-कवाडखेत्ताणं पि वत्तव्वं । णवरि कवाडखेत्तं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । संपहि पदर-लोगपूरण-

---

उक्त तीन प्रकारके मनुष्य समुद्घातसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १० ॥

यहां समुद्घातका निर्देश द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित है, क्योंकि, यह पद वेदना, कषाय, वैक्रियिक, मारणान्तिक, तैजस, आहार, दण्ड, कपाट प्रतर और लोकपूरण, इन सब समुद्घातोंका संग्रह करनेवाला है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

उक्त तीन प्रकारके मनुष्य समुद्घातकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ ११ ॥

चूंकी यह देशामर्शक सूत्र है अतः इसके द्वारा सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है । वेदना, कषाय, वैक्रियिक तैजस और आहारक समुद्घातको प्राप्त तीन प्रकारके मनुष्य चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागमें रहते हैं । विशेष इतना है कि मनुष्यनियोंमें तैजस और आहारक समुद्घात नहीं होते । मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त उक्त तीन प्रकारके मनुष्य तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, यहां मनुष्य अपर्याप्तोंका क्षेत्र प्रधान है । विशेष इतना है कि मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियोंका मारणान्तिक क्षेत्र चार लोकोंके असंख्यातवें भाग तथा मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार दण्ड और कपाट क्षेत्रोंका भी प्रमाण कहना चाहिये । परन्तु इतना विशेष है कि कपाटक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण है । अब प्रतर और

---

१. मु प्रतौ – तेजहार इतिपाठः ।

समुग्घादे पडुच्च खेत्तपदुप्पायणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि –

असंखेज्जेसु वा भाएसु सव्वलोगे वा ॥ १२ ॥

पदरसमुग्घादे लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु अवट्ठाणं होदि, वादवलएसु जीवपदेसाणमभावादो। लोगपूरणसमुग्घादे सव्वलोगे अवट्ठाणं होदि, जीवपदेसविरहिदलोगागासपदेसाभावादो। अधवा सव्वमेदमेक्कं चेव सुत्तमेक्कस्स समुग्घादगदस्स तिसु अवट्ठाणेसु खेत्तभेदपदुप्पायणादो।

मणुसअपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १३ ॥

सुगममेदं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ? ॥ १४ ॥

एदं देसामासियसुत्तं, तेणेदेण सूचिदत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा– सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगद चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे[1]

लोकपूरण समुद्घातोंकी अपेक्षा क्षेत्रनिरूपणके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं।

समुद्घातकी अपेक्षा उक्त तीन प्रकारके मनुष्य लोकके असंख्यात बहुभागोंमें अथवा सर्व लोकमें रहते हैं ॥ १२ ॥

प्रतरसमुद्घातकी अपेक्षा लोकके असंख्यात बहुभागोंमें अवस्थान होता है, क्योंकि, वातवलयोंमें जीवप्रदेशोंका अभाव रहता है। लोकपूरणसमुद्घातकी अपेक्षा सर्व लोकमें अवस्थान होता है, क्योंकि, इस अवस्थामें जीवप्रदेशोंसे रहित लोकाकाशके प्रदेशोंका अभाव है। अथवा यह सब एक ही सूत्र है, अर्थात् उपर्युक्त दोनों सूत्र भिन्न नहीं है, किन्तु एक ही सूत्ररूप हैं, क्योंकि, एक केवलिसमुद्घातगत जीवकी तीन अवस्थाओंमें क्षेत्रभेदका कथन करते हैं।

मनुष्य अपर्याप्त स्वस्थान, समुद्घात और उपपादकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १३ ॥

यह सूत्र सुगम है।

मनुष्य अपर्याप्त पूर्वोक्त तीन पदोंकी अपेक्षा लोकके असंख्यातवें भागक्षेत्रमें रहते हैं ॥ १४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- स्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त मनुष्य अपर्याप्त चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागमें संचित-

---

१ ब प्रतौ – भागो इतिपाठः।

णिक्खियवक्कमेण । विण्णासक्कमेण[1] पुण असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणाओ । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । मारणंतियखेत्ताणयणविहाणं वुच्चदे–सूचिअंगुलपढम-तदियवग्गमूले गुणेदूण जगसेडिम्हि भागे हिदे दव्वं होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जभागमेत्तउवक्कमणकालेण भागे हिदे एगसमयसंचिदमारणंतियरासी[2] होदि । एदस्स असंखेज्जदिभागो मारणंतिएण विणा णिप्फिडमाणरासी होदि । पुणो मारणंतियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण मारणंतियउवक्कमणकालेण गुणिदे मारणंतियकालब्भंतरे संचिदरासी होदि । पुणो अवरेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रज्जुआयामेण पलिदोवमअसंखेज्जदिभागेणोवट्टिदपदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण विक्खंभेण मुक्कमारंणतियरासी होदि । पुणो एदस्स ओगाहणगुणगारे ठविदे मारणंतियखेत्तं होदि । एत्थ ओवणट्ट जाणिय कायव्वं ।

क्रमसे रहते हैं । परन्तु विन्यासक्रमसे मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणी असंख्यात योजनकोटियां मनुष्य अपर्याप्तोंका क्षेत्र है । मारणान्तिकसमुद्‌घातको प्राप्त हुए मनुष्य अपर्याप्त तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोक एवं तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । मारणान्तिक क्षेत्रके निकालनेका विधान कहते हैं– सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंका परस्परमें गुणा कर जगश्रेणीमें भाग देनेपर मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्यप्रमाण प्राप्त होता है । उसमें आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकालका भाग देनेपर एक समय में संचित मारणान्तिकसमुद्‌घातगत मनुष्य अपर्याप्तोंकी राशि होती है । इसके असंख्यातवें भागप्रमाण मारणान्तिकसमुद्‌घातके विना मरण करनेवाली राशि है । पुनः मारणान्तिक राशिको आवलीके असंख्यातवें भागरूप मारणान्तिक उपक्रमणकालसे गुणित करनेपर मारणान्तिक कालके भीतर संचित राशिका प्रमाण होता है । पुनः अन्य पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर जो लब्ध हो उतना, राजुप्रमाण आयामसे तथा पल्योपमके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कम्भसे मारणान्तिकसमुद्‌घातको करनेवाले मनुष्य अपर्याप्तोंका प्रमाण होता है । पुनः इसके अवगाहनागुणकारके स्थापित करनेपर, अर्थात् इस राशिको अवगाहनासे गुणित करनेपर, मनुष्य अपर्याप्तकोंका मारणान्तिक क्षेत्र होता है । यहां अपवर्तन जानकर करना चाहिये ।

---

१. अ. क प्रत्योः 'विणासकमेण' इति पाठः ।

२. मु. प्रतौ मरंतरासी इतिपाठः ।

उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एत्थ उववादखेत्तं मारणंतियखेत्तं व ठवेदव्वं । णवरि एसो रासी एगसमयसंचिदो त्ति आवलियाए असंखेज्जदिभागगुणगारे[1] ण दादव्वो । पढमदंडमुवसंहरिय बिदियदंडेण सेडीए संखेज्जदिभागायामेण[2] मुक्कमारणंतियजीवे इच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो । एत्थ ओवट्टणा पुव्वं व ।

देवगदीए देवा सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १५ ॥

एत्थ तेजाहार-केवलिसमुग्घादा णत्थि, देवेसु तेसिमत्थित्तविरोहादो । किं सव्वलोगे किं लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु किं वा संखेज्जदिभागे किमसंखेज्जदिभागे किमणंतिमभागे किं वा संखेज्जासंखेज्जाणंतलोगेसु त्ति पुच्छिदे उत्तरसुत्तं भणदि । अधवा आसंकिदसुत्तमेदं चेसद्देण[3] विणा कधमासंकावगम्मदे ? तेण विणा वि तदट्ठावगदीदो ।

उपपादको प्राप्त मनुष्य अपर्याप्त तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोक एवं तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहां उपपादक्षेत्रको मारणान्तिक क्षेत्रके समान स्थापित करना चाहिये । विशेष इतना है कि यह राशि एक समयसंचित है, अतएव आवलीका असंख्यातवें भाग गुणकार में नहीं देना चाहिये । प्रथम दण्डका उपसंहार कर द्वितीय दण्डसे जगश्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण आयामसे मुक्तमारणान्तिक जीवोंकी इच्छाराशि स्थापित कर एक अन्य पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार स्थापित करना चाहिये । यहां अपवर्तन पहलेके समान है ।

देवगतिमें देव स्वस्थान, समुद्घात और उपपादसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? । ॥ १५ ॥

यहां तैजससमुद्घात, आहारकसमुद्घात और केवलिसमुद्घात नहीं हैं, क्योंकि, देवोंमे इनके अस्तित्वका विरोध है । 'क्या सर्व लोकमें, क्या लोकके असंख्यात बहुभागोंमें, क्या लोकके संख्यातवें भागमें, क्या लोकके असंख्यातवें भागमें, क्या लोकके अनन्तवें भागमें, अथवा क्या संख्यात, असंख्यात व अनन्त लोकोंमें रहते हैं' ऐसा पूछनेपर उत्तर सूत्र कहते हैं । अथवा यह आशंकासूत्र है ।

शंका– चेत् शब्दके विना कैसे आशंकाका परिज्ञान होता है ?

समाधान– क्योंकि, वा शब्दके विना भी उस अर्थका परिज्ञान हो जाता है ।

---

१ मु. प्रतौ गुणगादो इति पाठः । २ मु. प्रतौ व कायव्वं इति पाठः ।

३ मु. प्रतौ. वाप्सद्देण इति पाठः ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

देसामासियसुत्तमिदं, तेणेदेण सूचिदत्थस्स परूवणं कीरदे । तं जहा– सत्थाण-सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा देवा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । कुदो ? पहाणीकदजोइसियक्खेत्तादो । विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियरासीओ सग-सगरासीणं सव्वत्थ संखेज्जदिभागमेत्ताओ, सत्थाणसत्थाणरासी सगरासिस्स सव्वत्थ संखेज्जाभागमेत्ता त्ति कधं णव्वदे ? ण, गुरुवदेसादो, एदेसु पदेसु[1] ट्ठिददेवा तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे अच्छंति त्ति वक्खाणादो वा णव्वदे । मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभाग णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एदस्स खेत्तरस्स ट्ठवणविहाणं वुच्चदे। तं जहा-एत्थ वाणवेंतरखेत्तं पहाणं,तत्थतणसंखेज्ज-

---

देव उपर्युक्त पदोंसे लोकके असंख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ १६ ॥

यह सूत्र देशामर्शक है, इसलिये द्वारा सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त देव तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें, और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, यहां ज्योतिषी देवोंका क्षेत्र प्रधान है । विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त राशियां सर्वत्र अपनी अपनी राशियोंके संख्यातवें भागमात्र और स्वस्थानस्वस्थानराशि सर्वत्र अपनी राशिके संख्यात बहुभागप्रमाण होती है ।

शंका– 'विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त राशियां अपनी अपनी राशियोंके संख्यातवें भागमात्र हैं, तथा स्वस्थानस्वस्थानराशि सर्वत्र अपनी राशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं' यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, उपयुक्त राशियोंका प्रमाण गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । अथवा 'इन पदोंमें स्थित देव तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागमें रहते हैं' इस व्याख्यानसे जाना जाता है ।

मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त देव तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमेंरहते हैं । इस क्षेत्रके स्थापनाविधानको कहते हैं । वह इस प्रकार है –– यहां वानव्यन्तरोंका क्षेत्र प्रधान है क्योंकि, वहांपर

---

१. ब. प्रतौ – पदेसु इतिपाठोः नास्ति ।

वासाउएसु तत्थ ट्ठियअसंखेज्जवासाउएहिंतो असंखेज्जगुणेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालुवलंभादो। तेण वेंतररासिं ठविय मारणंतियउवक्कमणकालेणोवट्टिदसगुवक्कमणकालसंखेज्जरूवेहि भागे हिदे मुक्कमारणंतियजीवा होंति। तेसिमसंखेज्जदिभागो ईसिपब्भारादिउवरिमपुढवीसु उप्पज्जदि त्ति पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो दादव्वो। तिरिक्खेसु रज्जुमेत्तं गंतूणुप्पज्जमाणजीवाणमागमणट्ठं च पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेणब्भत्थसंखेज्जरज्जूहि गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि।

उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एदस्स खेत्तस्स विण्णासो मारणंतियभंगो। णवरि तिरिक्खरासिं तिरिक्खाणमुवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेणोवट्टिय पुणो देवेसुप्पज्जमाणरासिमिच्छिय तप्पाओग्गअसंखेज्जरूवेहि ओवट्टिय रज्जुमेत्तं गंतूणुप्पज्जमाणजीवाणं पमाणागमणट्ठं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो दादव्वो। पुणो बिदियदंडेण रज्जुसंखेज्जदिभागमेत्तायदजीवाणं पउरं संभवाभावादो पुणो अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो

....

स्थित असंख्यातवर्षायुष्कोंकी अपेक्षा असंख्यातगुणे वहांके संख्यातवर्षायुष्कोंमें आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकालकी उपलब्धि है इसलिये व्यन्तरराशिको स्थापित कर मारणान्तिक उपक्रमणकालसे अपवर्तित अपने उपक्रमणकालरूप संख्यात रूपोंका भाग देनेपर मुक्तमारणान्तिक जीवोंका प्रमाण होता है। उनका असंख्यातवां भाग ईषत्प्राग्भारादि उपरिम पृथिवियोंमें उत्पन्न होता है, इसलिये पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार देना चाहिये। तिर्यंचोंमें राजुमात्र जाकर उत्पन्न होनेवाले जीवोंके आगमनार्थ पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे गुणित संख्यात राजुओंसे गुणित करनेपर मारणान्तिक क्षेत्र होता है।

उपपादको प्राप्त देव तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इस क्षेत्रका विन्यास मारणान्तिक क्षेत्रके समान है। विशेष इतना है कि तिर्यंचराशिको तिर्यंचोंके उपक्रमणकालरूप आवलीके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित कर पुनः देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिकी इच्छा कर तत्प्रायोग्य असंख्यात रूपोंसे अपवर्तित कर राजुप्रमाण जाकर उत्पन्न होनेवाले जीवोंके प्रमाणको लानेके लिये पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार देना चाहिये। पुनः द्वितीय दण्डसे राजुके संख्यातवें भागमात्र आयामको प्राप्त जीवोंकी प्रचुर संभावना न होनेसे पुनः एक और अन्य पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार देना चाहिये।

भागहारो ठावव्वो । पुणो संखेज्जपदरंगुलगुणिदजगसेडिसंखेज्जभागे[1] गुणिदे उववाद-खेत्तं होदि । एत्थ पंचलोगोवट्टणं जाणिय कायव्वं ।

भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्ठसिद्धिविमाणवासियदेवा देवगदिभंगो ॥ १७ ॥

एसो दव्वट्ठियणयं पडुच्च णिद्देसो, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं जहा-सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा भवणवासियदेवा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । एत्थ खेत्तविण्णासो जाणिय कायव्वो । उववादगदाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । तिरिक्ख-मणुसाणं बे विग्गहे कादूण भवणवासियदेवेसु सेडीए संखेज्जदिभागायामेण बिदियदंडे ठिदाण[2] मुववादखेत्तं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं किण्ण लब्भदे ? णेदमसंभवादो । एगविग्गहं काऊण तत्थुप्पण्णाणमुववादखेत्तायामो ण ताव असंखेज्जजोयणमेत्तो 'सोलस दु खरो भागो पंकबहुलो य तह चुलासीदि । आवबहुलो असीदि-' त्ति सुत्तेण सह विरोहादो ।

पुनः संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित जगश्रेणिके संख्यातवें भागकें गुणित करनेपर उपपादक्षेत्र होता है । यहां पांच लोकोंका अपवर्तन जानकर करना चाहिये ।

भवनवासियोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देवों तकका क्षेत्र देवगतिके समान है ॥ १७ ॥

यह निर्देश द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे है, पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करनेपर विशेषता है । वह इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषाय-समुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त भवनवासी देव चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें और अढाई द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहां क्षेत्रविन्यास जानकर करना चाहिये । उपपादको प्राप्त भवनवासी देवोंके भी क्षेत्रका इसी प्रकार कथन करना चाहिये ।

शंका– दो विग्रह करके भवनवासी देवोंमें जगश्रेणीके संख्यातवे भागप्रमाण आयामसे द्वितीय दण्डमें स्थित उक्त देवोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान– ऐसा नहीं पाया जाता, क्योंकि असंभव है । एक विग्रह करके भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच-मनुष्योंके उपपादक्षेत्रका आयाम असंख्यात योजनमात्र नहीं है, क्योंकि, 'खरभाग सोलह सहस्र योजन, पंकबहुलभाग चौरासी सहस्र योजन, और अब्बहुलभाग अस्सी सहस्र योजन मोटा है' इस सूत्रके साथ विरोध होगा ।

---

१ मु. प्रती. भागेण इति पाठः । २ मु. प्रती विदाहाण इति पाठः ।

लोगंते ठाइदूण हेट्ठा गंतूण एगविग्गहं करिय तिरिच्छेण रज्जूए संखेज्जदिभागं गंतूणुप्पण्णाणं विदियदंडायामो सेडीए संखेज्जदिभागमेत्तो लब्भदि त्ति णेदं पि घडदे, तेसिं सुट्ठु थोवत्तादो। तं कुदो णव्वदे ? तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति वक्खाणाइरियवयणादो। ण दोण्णि विग्गहे[1] काऊणुप्पण्णाणं बिदिय-तदियदंडाणं संजोगो सेडीए संखेज्जदिभागायामो सेडि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदएगखंडायामो वा लब्भदि त्ति वोत्तुं जुत्तं, कंडुज्जुववट्टाए सव्वदिसाहिंतो आगंतूण एगविग्गहं काऊण उप्पज्जमाणजीवेहिंतो दो विग्गहे कादूण उप्पज्जमाणजीवाणमसंखेज्जदि भागत्तादो। तदो भवणवासियाणमुववादखेत्तं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो त्ति सिद्धं। मारणंतियसमुग्घादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगादो[2] असंखेज्जगुणे अच्छंति। कुदो ? सत्थाणादो अद्धरज्जुमेत्तं तिरिच्छेण गंतूण एगविग्गहं करिय संखेज्जरज्जूओ उड्ढं गंतूण सगउप्पत्तिट्ठाणं पत्ताणं तदुवलंभादो। वाणवेंतर-जोदिसियाणं देवगदिभंगो

लोकान्तमें स्थित होकर नीचे जाकर एक विग्रह करके तिर्यग्रूपसे राजुके संख्यातवें भाग जाकर उत्पन्न होनेवालोंके द्वितीय दण्डका आयाम जगश्रेणीके संख्यातवें भागमात्र प्राप्त है, यह भी घटित नहीं होता, क्योंकि, वे बहुत थोडे हैं।

शंका - यह कहांसे जाना जाता है ?

समाधान - 'उपपादगत भवनवासियोंका क्षेत्र तिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग है' इस प्रकार व्याख्यानाचार्योंके वचनसे जाना जाता है। दो विग्रह करके उत्पन्न हुए जीवोंके द्वितीय व तृतीय दण्डके संयोगमें जगश्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण आयाम, अथवा जगश्रेणीको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खण्डित करनेपर एक खण्डप्रमाण आयाम प्राप्त है, ऐसा कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि, बाणके समान ऋजु अवस्थामें सर्व दिशाओंसे आकर एक विग्रह करके उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षा दो विग्रह करके उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातवें भागमात्र हैं। इसलिये भवनवासियोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण है, यह बात सिद्ध हुई।

मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त उक्त देव तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, स्वस्थानसे अर्ध राजुमात्र तिरछे जाकर एक विग्रह करके संख्यात राजु ऊपर जाकर अपने उत्पत्तिस्थानको प्राप्त हुए उक्त देवोंके उपर्युक्त क्षेत्र पाया जाता है।

वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके क्षेत्रका प्ररूपण देवगतिके समान है, जो

---

१. ब प्रतौ विग्गहं इति पाठः। २ अ. ब. त. प्रतिषु णतिरिए इति पाठः।

ण विरुज्झदे, सत्थाणादिसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागुवलंभादो। णवरि जोदिसिएसु उवक्कमणकालो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, संखेज्जवासाउआणमभावादो।

सोहम्मीसाणो सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एत्थ सग-सग-खेत्तविण्णासो कायव्वो। अप्पणो ओहिक्खेत्तमेत्तं देवा विउव्वंति त्ति जं वयणं तण्ण घडदे, लोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवेउव्वियखेत्तप्पहुडिप्पसंगादो[1]। मारणंतिय-उववादगदा तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एत्थ ताव उववादखेत्तविण्णासो कीरदे। तं जहा– सगविक्खंभसूचिगुणिदसेडिं ठविय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सोहम्मीसाणुवक्कमणकालेण ओवट्टिदे उप्पज्जमाणजीवा होंति। पढमपत्थडे उप्पज्जमाणजीवाणमागमणट्ठमवरेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो। पुणो एदस्स पदरंगुलगुणिदसेडीए संखेज्जदि-भागे गुणगारेण ठविदे उववादखेत्तं होदि। एवं चेव मारणंतियखेत्तपरिक्खा कायव्वा।

विरुद्ध नहीं है; क्योंकि, स्वस्थानादिक पदोंमें तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग पाया जाता है। विशेष इतना है कि ज्योतिषी देवोंमें उपक्रमणकाल पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, उनमें संख्यात वर्षकी आयुवालोंका अभाव है।

सौधर्म ऐशानकल्पमें स्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त देव चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमे रहते हैं। यहां अपना अपना क्षेत्रविन्यास करना चाहिये। 'देव अपने अवधिक्षेत्र-प्रमाण विक्रिया करते हैं' इस प्रकार जो यह वचन है वह घटित नहीं होता, क्योंकि ऐसा माननेमें लोकके असंख्यातवें भागमात्र वैक्रियिकक्षेत्रादिका प्रसंग आता है।
(देखो पुस्तक ४, पृ. ७९-८०)

मारणान्तिक व उपपादको प्राप्त उक्त देव तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते है। यहां उपपादक्षेत्रका विन्यास करते हैं। वह इस प्रकार है – अपनी विष्कम्भसूचीसे गुणित जगश्रेणीको स्थापित कर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र सौधर्म-ईशान कल्पवासी देवोंके उपक्रमणकालसे अपवर्तित करनेपर उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण होता है। प्रथम प्रस्तारमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण जाननेके लिये एक अन्य पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार स्थापित करना चाहिये। पुनः इसके प्रतरांगुलसे गुणित जगश्रेणीके संख्यातवें भागको गुणकार रूपसे स्थापित करनेपर उपपादक्षेत्रका प्रमाण होता है। इसी प्रकार ही मारणान्तिकक्षेत्रकी परीक्षा करना चाहिये।

---

१. मु. प्रतौ सोहम्मीसाण इति पाठः। अ, ब, स. प्रतिषु संगादो इति पाठः।